।। दादू पंथी को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ दादू पंथी को संवाद लिखंते ||

|| साखी ||

अेकण दादु पंथी || संता सुखरामजी ने कहयो ||
देवजी पगे लॉगूं || अेंट सूं कहयो ||
तब संत सुखराम जी बोलिया ||

साखी ||

चिरंजीव जजमान ठाकूर || काहां साँग ओ धार्‍यो ||
के सुखराम बरण ने दरसण || पेर जनम क्यूँ हार्‍यो ||१||

दादू पंथी साधू आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज से अकड्कर बोला देवजी पैर पड़ता हूँ । यह दादू पंथी साधू राजपूत था और नया नया साधू बना था । यह दादू पंथी साधू ,साधू बनने से पहले गृहस्थी था । यह आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज को,देवजी पैर पड़ता हूँ ,ऐसा बोला था । साधू होनेपर जब देवजी पैर पड़ता हूँ,ऐसा अकड़कर बोला,तब आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज ठाकूर से बोले,यजमान ठाकुर चिरंजीवी रहो और बोले यह तू क्या सोंग धारण किया है?यह तेरा किया स़ोंग चारों वर्ण में नही है,एवम छःवों दर्शनों में भी नही है ऐसा सोंग धारण कर,तू यह मनुष्य जन्म क्यों हार गया है । ||१||

भला घराँका हातम छोरू || काहा करम अे कीया ||
के सुखराम भँवायां केसा || सांग धार क्यूं लीया ||२||

तू अच्छा,उत्तम याने राजपूत घराने का याने कुलवान घराने का पुत्र था । तुने साधू का सोंग धारण करने का क्या कर्म किया । अब तुझे भीख माँगकर खाना पड़ेगा । राजपूत का हाथ उपर रहता है याने किसी को कुछ देने का रहता है,राजपूत अपना हाथ किसी के सामने फैलाकर भीख नही माँगता । तू अच्छे राजपूत घराने का होकर बहुरूपीया की तरह,सोंग धारण कर भीख मांगने का हलका काम क्यों कर रहा है । ||२||

|| इति दादू पंथी का सम्वाद सम्पूर्ण ||